समझना चाहिए कि ये जो कुछ भी देखते हैं... क्योंकि दुनिया नहीं ऐसे जानती है। तुम बच्चे जानते हो। जो कुछ भी इन आँखों से देखते हैं वो कल न होंगे और बुद्धि अभी कहती है कि पीछे जो कुछ देखेंगे वो तो वण्डरफुल दुनिया देखेंगे, जिसमें जा करके निवास करेंगे। ये तो कुछ भी नहीं है। जैसे कोई बॉम्बे या कलकत्ता या दिल्ली, ये देखो तो जैसे कि तुम्हारे नज़र में तो ये गाँवड़े हैं। हम जो राजाई स्थापन करते हैं उसकी भेंट में ये बॉम्बे और ये, ये तो एक गाँवड़े हैं...छोटे से, कुछ भी नहीं हैं। तुम अभी कई बच्चे हैं, इतना महसूस नहीं करते हैं, इसलिए इतनी खुशी नहीं होती है। नहीं तो विश्व का मालिक बनना...। देखो, लड़ाई कितनी करते हैं, इण्डिया को फतह करना, फलाने को फतह करना। उसके ऊपर राज्य करना। कितनी बहादुरी दिखलाते हैं! और तुम बच्चे सारे विश्व की बादशाही ले रहे हो और क्या मेहनत करते हो! कोई भी तकलीफ नहीं है। अगर बच्चे अच्छी तरह से एकान्त में शांत में बैठ करके विचार करें तो कहें– बाबा तो हमको राजभाग का वर्सा 21 जन्म के लिए... क्योंकि ऐसे कोई भी दूसरा बच्चा या बच्ची या रजवाड़ा या प्रिन्स नहीं कहेंगे कि हमको कोई बाप से 21 जन्म का वर्सा मिलता है। वो भी समझेंगे कि बाप से अभी वर्सा मिला है। उसकी बुद्धि में ये तो नहीं कि फिर भी हमको राजाई का वर्सा मिलना है। तुम्हारी बुद्धि में तो ये है कि हम बेहद के बाप से सूर्यवंशी–चंद्रवंशी ये 21 जन्म राजभाग लेते हैं। सो भी तुम बच्चों की बुद्धि में और जो भी सर्विसएबुल बच्चे हैं, उनकी बुद्धि में ये अच्छा घड़ी–2 रहता है कि बेहद के बाप से...। उसको कहा ही जाता है सबसे प्रिय। भक्तिमार्ग में भी बहुत याद करते हैं कि बाबा, जब तुम आएँगे, तब हम आपसे वारी जा करके और फिर स्वर्ग का वर्सा फिर से लेंगे। ये कोई नई बात नहीं है। नहीं। भक्तिमार्ग में सदैव ये पुकारते रहते हैं। अभी तो सन्मुख देखते हैं कि बाप कैसे सहज डायरेक्शन देते हैं कि तुम पतित से पावन कैसे बन सकते हो और ये भी बच्चे जानते हैं कि बुलाते भी इसलिए हैं। और कोई जादूगरी देखने के लिए नहीं। बस, हमको पतित से पावन बनाओ। तो पावन बनाना, कहना तो बहुत सहज है पतित से पावन बनाओ; परन्तु उनके साथ पावन माना ही विश्व का मालिक बनाओ। बाबा, आप विश्व का रचता हो और विश्व आपको बाबा कहते हैं, विश्व के बाबा हो। विश्व के बाबा हो तो बच्चों को विश्व की बादशाही मिलनी चाहिए ना। तो देखो, विश्व का बाप आते ही हैं यहाँ भारत में और अभी तुमको मालूम है, दुनिया में कोई नहीं जानते हैं कि विश्व का मालिक या जिसको ऊँचे ते ऊँचा भगवत शिव कहते हैं, वो वो शिव है, जो भारत में जन्म लेते हैं। ऐसे किसकी बुद्धि में कुछ भी नहीं रहता है। ऐसे जैसे कोई और देश मनाते हैं...तैसे शिव जयन्ती भी मना लेते हैं, कृष्ण जयन्ती भी मना लेते हैं, रामनवमी भी मना लेते हैं, रखड़ी बंधन, दशहरा वगैरह सब मना लेते हैं। तुम बच्चे जानते हो कि ये सभी इस समय की, तुम्हारी जो स्थापना का कार्य है, ये सभी फिर भक्तिमार्ग में भिन्न–2 रख दिया है मास वर्ष में। कोई मास में कौन–सा उत्सव मनाते हैं। कभी देखो तो रखड़ी बंधन का, कभी देखो कृष्ण जन्म अष्टमी का, कभी ये रामनवमी का। ये तुम बनने वाले हो ना। अभी जान गए हो और जो भी पर्व हैं, सो सभी इस समय के हैं। दशहरा भी अभी का, दीपमाला भी अभी की, रखड़ी बंधन अभी, जो भी कोई याद करें। होली, धूरिया वगैरह–2 सभी इस समय के। अभी त्यौहार बहुत है भारत में। ये क्रिश्चियन का क्या त्यौहार है? बस, एक ...मनाते हैं और दूसरा इस्टर्न हॉलीडेज़ मनाते हैं और कोई एक/दो और होगा। तुम्हारा तो बहुत हैं। (किसी ने कहा– गुडफ्राई डे) गुडफ्राई डे, चलो उन लोगों ने भी नाम रख दिया होगा। महसूस होता है ना बच्चों को कि हम बेहद के बाप के पास बैठे हैं और वास्तव में जो सरेण्डर करते हैं , कहते हैं बाबा, सब कुछ आपका ही है, वो ऐसे ही समझते हैं कि हम शिवबाबा के भण्डारे से खाते हैं; क्योंकि शिवबाबा ने हमको दिया था ये सब कुछ। ... शिवबाबा को सब कुछ दे देते हैं, अर्पण करते हैं। फिर बाबा कहते हैं ना बच्चे, भले अच्छे ट्रस्टी हो करके और तुम उनसे जो शरीर निर्वाह करना है सो करो। कभी भी कोई पतित को दान–पुण्य नहीं

करना; क्योंकि पतित को दान–पुण्य करने से ज़रूर पतित काम में लगाएँगे और यहाँ सभी कल्याण के काम में पैसे लगते हैं। भारत के हर एक मनुष्य का कल्याण हो। जानते हो कि शिवबाबा तुम्हारा पैसा भारत को, बच्चों को स्वर्ग का मालिक बनाने में लगाते हैं। ये मकान बनाना, ये करना, उसमें...। अभी ये भी तो देखो, तुम बच्चे भी समझते नहीं हो। पिछाड़ी में यहाँ बहुत आएँगे, ढेर आएँगे। ये मकान बहुत बड़े हो जाएँगे और बहुत दफा आएँगे। जब कुछ भी थोड़ा भी हंगामा सुनेंगे ज़ोर से, चलो–2 अभी बाबा के पास चल करके बैठें और बाबा को ये ध्यान में होने कारण हमेशा दो वर्ष का सामान रखते ही हैं, यही समझ करके कि बच्चे पिछाड़ी में आएँगे, उनकी पालना होगी। ये बच्चे सब आएँगे। यहाँ आ करके रहेंगे। बड़े मकान होंगे। जो भाग करके आएँगे। बड़े इत्तफाक होंगे। कहाँ अर्थक्वेक्स होंगी, कहाँ क्या होगा। डुक्कड़ तो बहुत ही पड़ेंगे; क्योंकि ये असंभव है कि इतना कोई अन्न भारत पैदा कर सके जो अपने भारतवासी खा सकें। ये असंभव बात है; क्योंकि इसके पिछाड़ी ये है ड्रामा में कि इनको डुक्कड़ में मरना है बहुत। फैमिन, ये एक नैचुरल कैलेमिटियाँ होनी हैं। सो अगर कोई बच्चा विचारवान होवे तो वो समझे ये जो कुछ पुरुषार्थ करते हैं, ये फलाना करते हैं, ये करते हैं, जमीन करते हैं, लेते हैं, कुछ भी नहीं। देखो, तैयार हो जाती है जमीन और बेटाइम कोई बरसात पड़ गई, ये सब खलास हो गया। अच्छा, न बरसात पड़ी, ये खराब हो गया। तो नैचुरल कैलेमिटीज़ होती है ना। बच्चे जानते हैं कि अभी हम अपनी राजधानी ऐसी स्थापन करते हैं, जहाँ कोई प्रकार की तकलीफ... कुछ भी नहीं। तो ये खयालात ही बच्चों की बुद्धि में होने चाहिए सदैव– हम क्या कर रहे हैं! बाबा की मदद से हम अपना भी कल्याण करते हैं, भारतवासियों का भी कल्याण करते हैं, विश्व का भी कल्याण करते हैं; क्योंकि बाप विश्व का कल्याण करते हैं ना। तो मददगार चाहिए ना। और किसका तो कल्याण करेंगे ना। तो देखो, तुम बच्चों का कल्याण हो रहा है। बाकी थोड़ा रोज़। धीर देते रहते हैं। जैसे कोई को बहुत बड़ी बीमारी होती है ना, तो छूटने का जब समय आता है तो बोलते हैं अभी छूटा, अभी छूटा और डाक्टर्स भी कहते हैं इम्प्रूवमेन्ट कर रहे हैं, इम्प्रूवमेन्ट कर रहे हैं। तो देखते हैं बरोबर दिन–प्रतिदिन इम्प्रूवमेन्ट होती जाती है और घरवालों को खुशी, बीमार को भी खुशी होती जाती है। तैसे तुम भी बच्चे जानते हो कि बाकी थोड़ा रोज़ है। हमारा ये सभी जो भी रोग, बीमारी, ये दुःख वगैरह, ये सभी अभी खतम होंगे। फिर तो हम सुख की शेष शैया पर, क्या कहते हैं ये विष्णु के लिए, क्षीर सागर में बड़े आराम से रहेंगे। यहाँ देखो इन बच्चों को कितनी तकलीफ होती है! कोई को क्या बंधन, कोई की क्या बीमारी, कोई को क्या तकलीफ। तो बच्चों को ये ज़रूर ध्यान में रहना है बाबा से अभी हमको 21 जन्म का राज्य, कल्प पहले माफिक, सृष्टि ड्रामा के चक्र अनुसार, फिर से मिल रहा है। हम बाबा को याद करते हैं और राज्य को याद करते हैं। ऐसे ही और सबको भी बताना है। तुम बच्चों को बताना है ना। तुम जाते हो सतसंग में, वहाँ किस एम–ऑब्जेक्ट से जाते हो वा किस अभिप्राय से जाते हो? तो तुम बच्चे क्या कहेंगे? हम जाते हैं बापदादा के पास राजयोग सीखने के लिए भविष्य 21 जन्म के लिए और कल्प पहले मुआफिक ड्रामा के अनुसार ये हमको राजधानी स्थापन करनी है अपने लिए, ये जो विनाश होने का है उनसे पहले। तो बच्चों को समझाना है ना। कोई भी पूछे बच्चों से, तो बच्चों को ये समझाना है। तुम्हारा बच्चों का तो नाम अभी ब्रह्माकुमार–कुमारी हो गया ना। भले धंधे में तुम्हारा वो नाम है, फिर भी तुम कहलाते तो हो ना अभी ब्रह्माकुमार। तुम लोग को काम भी ब्रह्माकुमार का लिखना चाहिए; क्योंकि डबल धंधा है ना– लौकिक भी, परलौकिक भी। शरीर निर्वाह के लिए वो करते हैं और भविष्य 21 जन्म के लिए ; क्योंकि भविष्य दूसरे जन्म के लिए भी भक्तिमार्ग में कुछ न कुछ मनुष्य पुरुषार्थ करते हैं। ये भक्ति है ही इसीलिए। जो अच्छा–2 काम करते हैं वो समझते हैं कि दूसरे जन्म में हमको अच्छा जन्म मिलेगा। ठीक है ना। अभी तुम जानते हो कि दूसरे 21 जन्म के लिए हमको बहुत अच्छा जन्म मिलने का है। अभी एक जन्म की बात नहीं। तुम पुरुषार्थ कोई कल दूसरे जन्म के लिए, एक जन्म के लिए नहीं करते हो। नहीं, यूँ तो गाया जाता है–

जो–2 अच्छा कर्म करते हैं, दूसरे जन्म में उनको अच्छा फल मिलता है। ठीक है ना। अभी इस समय में जो–2 श्रीमत पर अच्छा कर्म करते हैं वो 21 जन्म के लिए बाप से वर्सा पाते हैं। और कितना फर्क हो गया और ये भक्तिमार्ग में भी तो कोई इतना सुख तो मिलता नहीं है। भले कितना भी दान–पुण्य कोई करे, तो ऐसे तो सुख नहीं मिल सकता है। यहाँ 21 जन्म के लिए भरपूर सुख। तो ये समझ करके पुरुषार्थ में अच्छा बनना चाहिए। पुरुषार्थ खूब करना चाहिए। औरों को भी रास्ता बताना चाहिए। ये सभी भक्तिमार्ग में रास्ता बताते हैं ना। क्या कहते हैं? तीर्थ, चलो–2 मंदिर में ऊपर में, श्रीनाथ के दरबार में चलो या बद्रीनाथ के दरबार में चलो। चलो, फिर क्या ! ..चक्कर लगाकर घर में फिर चले आते हैं; क्योंकि पतित दुनिया है। कभी भी जब भी जाते हैं तीर्थ यात्रा पर, तब पवित्र ज़रूर रहते हैं। फिर घर में आकर पतित बन जाते हैं। ये तो बच्चे जानते हैं कि नई यात्रा पर हो, फिर तुम बच्चों को इस मृत्युलोक में लौट कर आना ही नहीं है। ... इस पुरानी दुनिया को पिछाड़ी का सलाम देना है। जैसे कोई दुश्मन की एफीजी जलाई जाती है ना, जैसे रावण की एफीजी जलाई जाती है, तैसे ये जो रावण की दुनिया है, रावण राज्य है ना, तो ये बड़ी एफीजी क्या है, ये तो बड़ी दुनिया है, एकदम उसका राज्य। तो तुम जानते हो कि अभी रावण राज्य तो आग लगती। ये भी तो रावण का राज्य हुआ ना। ये जो कलहयुग है, ये जैसे कि सारे रावण की एफीजी है ; क्योंकि उनका है ना ये राज्य। तो उनके (लिए) ऐसे कहेंगे रावण राज्य मुर्दाबाद, राम राज्य जिन्दाबाद। तो जब ये राम राज्य है तो सारे विश्व में है, फिर दूसरा कोई नहीं रहता है। ये भी तुम बच्चों के बुद्धि में है कि अभी ये जो भी राजधानियाँ हैं, ये सब रावण राज्य है। ये बड़ा इसका विस्तार है। बहुत लम्बा–चौड़ा है। ये रावण राज्य अभी मुर्दाबाद होता है और हमारा राम राज्य जिन्दाबाद हो रहा है, जिसके लिए हम सिर्फ पवित्र बन रहे हैं। पवित्रता बिगर तो कुछ भी हासिल नहीं। देखो, सिर्फ सन्यासी पवित्र बनते हैं, और तो कुछ नहीं करते हैं? नहीं, कोई को सद्गति नहीं दे सकते हैं। गुरू बनते हैं। सो भी आजकल तो कुछ भी नहीं। पवित्र भी नहीं बनाते हैं और यहाँ तो देखो, तुम बच्चों को, बच्चियों को, सबको, जो भी आते हैं, उनको यही कहा जाता है कि अगर पावन दुनिया में चलना है वा पावन घर चलना है तो भी बाप को याद करो। तो ये जो बिचारी बुड्ढियाँ हैं...। तकलीफ तो नहीं देते हैं। देखो, बाप आया हुआ है बच्चों को पावन बनाने के लिए। कितनी युक्ति कि घर बैठे। तुम लोगों को यहाँ आने की इसलिए कोई दरकार नहीं है कि हम जाते हैं बाबा के पास पतित से पावन बनने। जैसे कोई घर छोड़ करके जाते हैं कुम्भ के मेले पर, हम पतित से पावन बनने जाते हैं। नहीं, वो बात नहीं है। यहाँ आते हो बाबा के पास, सन्मुख मिल करके एक तो खुशी होती है कि हम फिर से बेहद से(के) बाप से आ करके मिले हैं और बाबा हमको युक्ति बता देते हैं कि सबको कोई यहाँ नहीं रहना है। घर जाना है। बड़ी सहज युक्ति बता देते हैं। एवर बड़ी आयु बनने में, सदैव निरोगी रहने में और ये जो पतित बना हुआ है, दोनों इकट्ठे होते हैं। तो पवित्र भी बनते हो, फिर वहाँ भी निरोगी और बड़ी आयु भी बनती है सिर्फ योग से। देखो, कितना फायदा है! कोई डॉक्टर या सर्जन या वैद्य कोई दवा देते हैं तो उनको स्वीकार करनी पड़ती है ना। अमल में ले आते हैं। ये बाप भी तो सर्जन है। ये सर्जन ऑपरेशन्स वगैरह करते हैं ना। ये तो देखो बोलते हैं, योग से कभी तुम रोगी बनेंगे ही नहीं। नहीं तो जाओ, हॉस्पिटल्स में जाकर देखो, क्या–2 लगा हुआ है। कितनी बिमारियाँ हैं! कितना वो तरस आता है। तो बाप बोलते हैं कि बच्चे, ये तो जन्म–जन्मांतर बीमार पड़ते हैं, हॉस्पिटल में तो हैं ही हैं और बच्चे जानते हैं कि हमारे स्वर्ग में कोई हॉस्पिटल–वास्पिटल होती ही नहीं हैं। डॉक्टरों की दरकार नहीं है, बैरिस्टरों की दरकार नहीं है, जजों की दरकार नहीं है। देखो, तुम कैसी अच्छी फर्स्टक्लास राजधानी स्थापन कर रहे हो। तो खुशी होनी चाहिए ना बच्चों को। बच्चों को बहुत खुशी होनी चाहिए। जब भी आपस में मिलते हो, सेन्टर में भी मिलते हो तो ऐसी–2 बातें...। यहाँ बैठ करके अपना अनुभव सुनाते हो ना, तो ऐसा–2 मीठा अनुभव सुनाना चाहिए– हम क्या कर रहे

हैं, श्रीमत पर हम कैसे अपना जीवन हीरे जैसा बना रहे हैं। हम अपना हीरे जैसा जीवन बनाते हैं; परन्तु सारे विश्व को हीरे जैसा बना देते हैं; क्योंकि हम जहाँ रहेंगे, वो तो सुखधाम ही होगें। वहाँ दुःखधाम तो होते ही नहीं हैं। ये देखो, बाबा तुम बच्चों द्वारा कितनी सेवा लेते हैं। खुद भी करते हैं। करनकरावनहार। खुद भी तुम बच्चों का कल्याण करते हैं, बच्चों को कहते हैं तुम भी सबका कल्याण करो। सबको यही महामंत्र देते रहो– बाप को याद करो, वर्से को याद करो। बाप को याद करो। बाबा आया हुआ है। ऐसे ही फिर से कहते हैं। आगे भी कल्प पहले कहा था, अभी भी फिर से कहते हैं– बाबा आया है। बोलते हैं सबको कहो कि बेहद के बाप को याद करो और वर्से को याद करो। 5000 वर्ष के बाद हम फिर से कहते हैं कि बाप को याद करो, वर्से को याद करो। मन्मनाभव मद्याजीभव। बाप को याद करो, विष्णुपुरी का राज्य मिलेगा। ये पक्का–2 कर दो; क्योंकि चित्र भी तो है। मगर चित्र भी तुम जानते हो। चित्र सिवाय भी तुम समझा सकते हो; क्योंकि सुना तो हुआ है कि ब्रह्मा द्वारा बाप आ करके स्थापना करते हैं दैवी स्वराज्य की। तो हम ब्रह्मा पुत्रियाँ हैं। परमात्मा ब्रह्मा द्वारा दैवी सम्प्रदाय स्थापन करते हैं या आसुरी को रिज्यूविनेट करते हैं। हम जो पतित हैं, ब्रह्मा द्वारा हमको पावन बनाते हैं। तो ऐसे–2 बहुतों को ये निमंत्रण देते रहो। वो है ना बरोबर कि सबको निमंत्रण देना, एक भी न रहे। एक तो तुम जाकर निमंत्रण दो, दूसरी अख़बारें भी निमंत्रण देंगी। वो कुछ कम काम नहीं करती है। उसमें भी चित्र पड़ेंगे, धीरे–2 सब जगह में जाएँगे, टाइम लगेंगे। टाइम भी बहुत जास्ती नहीं समझना; क्योंकि जब हंगामा होता है, तब सब हाय–2 करते रहते हैं। उनकी बुद्धि में ये ज्ञान ठहरता ही नहीं। बोले, याद करो तो उनका ये मरा, ये मरा। उस तरफ में वो दुःखी होते रहेंगे। अभी समय है बच्चों को। जितना जल्दी हो सके इतना बच्चों को ख्याल आना चाहिए हम जल्दी–2 याद करें तो ये खाद जल्दी निकल जावे। ऐसा न हो कि खाद निकालने के पहले हमारा शरीर न कहाँ छूट जाए। पीछे तो मुश्किल हो जाएगा। इसलिए इसी जन्म में पुरुषार्थ करके जितना हो सके...। शरीर के ऊपर भरोसा नहीं है ना। इसलिए इसी जन्म में हमको बाबा को याद करना है। उसका नतीजा क्या होगा? योग में रहेंगे, तुम बच्चों की आयु बढ़ती जाएगी। फायदा भी होता जाएगा। इसलिए अपनी याद के लिए अपने से बात करते रहो, अपन को समझते रहो– हम कहाँ तक अपने अति प्रिय बाबा से, जिससे हम अभी सदा सुख का वर्सा लेते हैं, कितना याद करते हैं और कितना प्रेम से याद करते हैं। प्रेम में कोई याद करते हैं तो प्यार के आँसू भी बहते रहते हैं। कई–2 सुबह को बैठ करके देखो। तो प्रेम से बैठकर उन्हें याद करो– .. बाबा, हम कितना बड़ा खुशनसीब हैं, जो हम आ करके आपके बच्चे बने हैं और आपसे अभी हमको सदा सुख का वर्सा मिलता है। भक्तिमार्ग में हम इतना पुकार करती थी। अब भक्ति पूरी हुई है। बाप आया हुआ है। दुनिया को मालूम नहीं है कि कोई भक्ति पूरी होती है। तुम बच्चों को मालूम है कि भक्ति मार्ग...। अंग्रेज़ी में भक्तिकल्ट कहते हैं। इसको भक्तिमार्ग कहते हैं। अभी भक्तिमार्ग खतम होने का है; क्योंकि ज्ञान सागर आ गया। तो अभी समझा ना भक्ति माना भक्ति। ये वेद,ग्रंथ,शास्त्र पढ़ना, ये सब करना भक्ति। अब भक्ति से, पढ़ने से, तो ऐसे तो नहीं होगा, भक्ति माना ही दुर्गति, फिर ज्ञान चाहिए बाप का और पतित–पावन को ज़रूर आना पड़े। पुकारते भी पतित–पावन को है, और तो कोई चीज़ को नहीं पुकारते हैं। पतित–पावन आओ! आ करके हमको सद्गति दो। तो बाप आ करके समझाते हैं ना बच्चों को कि तुम्हारी दुर्गति देखो कैसे हुई। ये तुम थोड़े ही समझ सकते थे। कोई भी मनुष्य ऐसे नहीं समझते हैं, कोई भक्ति से दुर्गति होती है। भले जितनी भक्ति करेंगे जितनी करेंगे इतना भगवान हमको जल्द मिलेगा कोई न कोई रूप में। अभी कोई न कोई रूप में कोई आवे, कोई ऐसे थोड़े ही मिलते हैं। नहीं, बाप आते ही हैं, एक ही रूप धारण करते हैं। सो भी बच्चे जानते हैं कि बरोबर बाबा हमको इस ब्रह्मा के तन से देखो कितना पढ़ाते हैं। कितना ये याद भी कैसे सिखलाते हैं कि मामेकम् याद करो तो विकर्म विनाश होगा। तुमको ऐसे तो नहीं कहते हैं कि ब्रह्मा को याद करो। तुमको

कहते हैं मामेकम् याद करो तो इस योग से...। तो योग ऊँचे ते ऊँचे से चाहिए ना। देखो, तुम्हारा योग ऊँचे से ऊँचा बाप के साथ। तो उनसे क्या होगा? हम पावन बन जाएँगे। फिर वहाँ मूलवतन में जाकर बाप के गले का हार बनेंगे। तो ..नंबरवार जैसे गले का हार बनेंगे सारी दुनिया की जीवात्माएँ, जीव की आत्माएँ, ऐसे नंबरवार फिर से आएँगे पार्ट बजाने। अच्छा, यहाँ मौज में रहे पड़े हो। जाते हैं पहाड़ पर घूमने के लिए, विश्राम पाने के लिए। वो कोई भी धंधेधोरी की ... छोड़ करके, ये पहाड़ों पर जाते हैं शांत और विश्राम पाने के लिए। उनको कोई ये ज्ञान या राजयोग, ये कोई कमाई नहीं होती है। सिर्फ रेस्ट लेने के लिए जाते हैं, बहुत थक जाते हैं और यहाँ तो तुमको...। तुम(को) अभी मालूम पड़ता है कि हम आधाकल्प के थके हुए हैं ये भक्तिमार्ग में बाबा को ढूँढ़ने में; परन्तु कहाँ भी बाबा का पता नहीं मिलता है। बाप आए तब अपना पता दे। देखो, है तो वही मन्मनाभव, नाम दे दिया कृष्ण का। अभी कृष्ण को कभी कोई भगवान नहीं माने। अच्छा! .... तुम योग में रहकर भोजन पा सकते हो। पीछे जितनी परहेज कर सको। परहेज तो कोई सिखलाते नहीं हैं कभी भी ; क्योंकि बहुत परहेज सिखलानी पड़ती है। सन्यासी कभी कोई को कह नहीं सकेंगे– तुम कमल फूल के समान गृहस्थ व्यवहार में रहकर बाप को याद करो। वो इन बातों को जानते ही नहीं हैं। कभी कह न सकें; क्योंकि खुद थोड़े ही रहे हैं। खुद भागे हैं तो दूसरे को ये सलाह थोड़े ही देंगे। वो जानते नहीं हैं इस राय देने को। ये राय बाप देते हैं। वही जानते हैं कि बच्चे, अपने घर–बार में बच्चों से बैठ करके एक सिर्फ करो– एक तो पवित्र रहो, मुझे याद करो। नहीं तो याद के लिए देखो कितने चित्र हैं! अनेक चित्र हैं, अकीचार चित्र हैं। तो बाप बोलते हैं– नहीं, अपने बाप को याद करो, वर्सा तो उनसे मिलेगा, कोई चित्रों से थोड़े ही वर्सा मिलना है। जो भी तुम देखते हो, वो सब ये रचना है। मैं हूँ रचता सबका। रचता (से ही) वर्सा मिलेगा, और कोई से वर्सा ले नहीं सकते। देखो, समझ तो सकते हो ना। साधु,संत,महात्मा ये भी जन्म–जन्मांतर है इनका। ये सन्यास धर्म शुरू हुआ, उसको भी 1500 वर्ष हो गया। शंकराचार्य का ये सन्यासी मठ। अच्छा, उनका भी संग करते आए, करते आए। ये सीढ़ी उतरते आए हैं, नीचे गिरते आए हैं। सीढ़ी ऊपर तो चढ़ न सकेंगे ना। सीढ़ी ऊपर में कोई चढ़ न सके। सबको उतरना ज़रूर है.. तमोप्रधान ज़रूर बनना है। जो बाप आ करके फिर सबको सतोप्रधान बना...। अच्छा बच्ची! बाजा बजाओ।

(तुलसी)दास ये मंत्र जपे, चंदन घीसे, तिलक करे रघुवीर। कहते हैं ना! बस, तुम याद करते रहो। तुमको राजाई का तिलक मिल जाएगा। मनुष्यों ने तो ये सभी टोटका बनाए हैं; परन्तु नहीं, बाप कहते हैं तुम अपने ऊपर आपे ही याद से राज्य का तिलक ले सकते हो। (म्युज़िक बजा)

अति लाडले और अति सिकीलधे रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बापदादा का; क्योंकि अभी रूहानी बाप भी हुआ, तो दादा भी रूहानी हुआ ना; क्योंकि आत्मअभिमानी सब बने हैं ना। तो रूहानी बाप, रूहानी दादा। बच्चे जानते हैं कि बरोबर दादा द्वारा रूहानी बाप से...। यादप्यार और गुडनाइट।